इकाई 4 सार्वजनिक वस्तु सिद्धांत

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 विषय प्रवेश

4.2 वस्तुओं का वर्गीकरण

4.3 सार्वजनिक वस्तुओं के अभिलक्षण

4.4 सावर्जनिक वस्तुओं का सिद्धांत

4.4.1 लिण्डल संतुलन

4.4.2 सैम्युल्सन का सार्वजनिक व्यय संबंधी सिद्धांत

4.5 निजेतर वस्तुएँ

4.5.1 क्लब वस्तुएँ

4.5.2 विशेष गुण वस्तुएँ एवं अवगुण वस्तुएँ

4.6 मुफ्तखोरी की समस्या

4.7 स्थानीय एवं वैश्विक वस्तुएँ

4.7.1 स्थानीय सार्वजनिक वस्तुएँ

4.7.2 वैश्विक सार्वजनिक वस्तुएँ

4.8 सार-संक्षेप

4.9 शब्दावली

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.11 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

4.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद, आप इस योग्य होंगे कि :

- वस्तुओं को निजी वस्तुओं और सार्वजनिक वस्तुओं में वर्गीकृत कर सकें;
- सार्वजनिक वस्तुओं के अभिलक्षण बता सकें;
- सार्वजनिक वस्तुओं के संदर्भ में दो सैद्धांतिक प्रतिदर्शों (लिण्डल संतुलन और सैम्युल्सन के सार्वजनिक व्यय संबंधी सिद्धांत) पर चर्चा कर सकें;
- सार्वजनिक वस्तुओं के अभिलक्षणों वाली विशेष वस्तुओं को पहचान सकें;
- यह स्पष्ट करते हुए कि विशेष गुण वस्तुओं के उपभोग को क्यों प्रोत्साहित किया जाता है (और अवगुण वस्तुओं के उपभोग को क्यों हतोत्साहित), 'विशेष गुण वस्तुओं' और 'अवगुण वस्तुओं' के बीच अंतर स्पष्ट कर सकें;
- मुफ़्तख़ोरी की समस्या का ख़ाका खींच सकें; तथा
- स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं और वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के बीच भेद कर सकें।

4.1 प्रस्तावना

वह वस्तु जो मेरे लिए अच्छी है, मेरे लिए 'सद्–पदार्थ' अर्थात् लाभकारी-वस्तु होगी। और वह वस्तु जो मेरे लिए बुरी है, मेरे लिए 'अप–पदार्थ' अर्थात् हानिकारी वस्तु होगी। साथ ही, अधिकांशतः, यदि पूर्णतः नहीं, वे वस्तुएँ जो मेरे लिए 'लाभ-वस्तुएँ' हैं, दूसरों के लिए भी लाभ-वस्तुएँ (हानि वस्तुएँ नहीं) होंगी (अथवा अधिक से अधिक अनुकूल स्थिति में, वे लाभ-वस्तु और हानि-वस्तु के बीच उदासीन होंगी)। हित-वस्तुएँ या लाभ-वस्तुएँ और अहित-वस्तुएँ या हानि-वस्तुएँ, इस लिहाज से, सकारात्मक अर्थ (न कि नियामक अर्थ) रखती हैं। खाद्य, वस्त्र एवं कार वस्तुएँ हैं, मगर वस्तुएँ तो विष, धूम्रपान सामग्री एवं मादक पेय भी हैं, और यही कारण है कि हम उन्हें पैसा ख़र्च करके ही लेते हैं। वे वस्तुएँ जिनसे हम मुक्त होना चाहते हैं और उनके निराकरण के लिए पैसा ख़र्च करते हैं, जैसे कूड़ा-कर्कट, हानि-वस्तुएँ हैं। इस हिसाब से, प्रदूषण भी हानि-वस्तु है क्योंकि हम उसे कम करना चाहते हैं।

वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है, परंतु एक विशेष वर्गीकरण है जो कि सभी वस्तुओं को दो विशिष्ट श्रेणियों में रखता है; यथा– निजी वस्तुएँ और सार्वजनिक वस्तुएँ। यद्यपि सार्वजनिक वस्तुएँ पुराकाल (यथा, अनेकानेक वर्षों) से ही विद्यमान हैं, उनका स्पष्ट प्रतिपादन कोई सौ वर्ष पुराना भी नहीं है। बाज़ार जिसे निजी वस्तुओं की इष्टतम आपूर्ति हेतु संसाधनों का एक दक्ष आवंटक माना जाता है, सार्वजनिक वस्तुओं के मामले में यह भूमिका निभाने में विफल ही रहा है। इसीलिए वह सरकार का अपने राजस्व में से इनके प्रावधान का आह्वान करता है।

इस इकाई में, हम सार्वजनिक वस्तुओं के दो विशेष अभिलक्षणों और उन समस्याओं का अध्ययन करेंगे जो संसाधन आवंटन अथवा कीमत-निर्धारण में उत्पन्न होती हैं। हम संक्षेप में उन वस्तुओं के विषय में भी पढ़ेंगे जो इन दो अभिलक्षणों में से कोई एक अथवा इन अभिलक्षणों को अंशतः ही साझा करती हैं। हम विशेष गुण वस्तुओं और अवगुण वस्तुओं के विषय में भी जानेंगे, जो कि सार्वजनिक नीति के क्षेत्र में विशेष महत्त्व रखती हैं। हम स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं और वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के विषय में भी जानकारी हासिल करेंगे।

4.2 वस्तुओं का वर्गीकरण

वस्तुओं को अनेक तरीकों से वर्गीकृत किया जा सकता है। एक ओर ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका उपभोग हम अपनी आय शून्य होने पर भी करेंगे तो दूसरी ओर वे वस्तुएँ हैं जिनका उपभोग हम यथेष्ट रूप से सम्पन्न होने पर ही करेंगे। पूर्ववर्ती वस्तुओं को आवश्यक या अनिवार्य वस्तुएँ कहा जाता है और परवर्ती को विलास-वस्तुएँ। ये आमतौर पर एक-दूसरे की प्रतिस्थापक नहीं होतीं। आवश्यक वस्तुओं में, कुछ सामान्य होती हैं जबकि अन्य 'निकृष्ट' या 'घटिया' होती हैं। आय में वृद्धि होते ही कुछ वस्तुओं को अन्य वस्तुओं द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। जैसे–जैसे हम आय सोपान में ऊपर की ओर जाते हैं, हम स्थानीय फलों के स्थान पर विदेशागत फल और स्थानीय फूलों के स्थान पर आयातित फूल लेने लगते हैं। *यह वर्गीकरण आय पर ही आधारित है।*

माँग के नियम के अनुसार, कीमत परिवर्तन और मात्रा परिवर्तन के बीच प्रतिलोम संबंध होता है। कभी-कभी यह देखा जाता है कि कीमत और मात्रा दोनों एक ही दिशा में बदलते हैं। वस्तुतः, ऐसी वस्तुओं का उपभोग करने वाले अमीर नहीं होते। ये वस्तुएँ गिफ़ेन वस्तुएँ कहलाती हैं (रॉबर्ट गिफ़ेन के सम्मान में, जिन्होंने इस पर सर्वप्रथम ग़ौर किया)। इसी प्रकार, थॉर्स्टीन वेब्लेन ने देखा कि ऊँची क़ीमतें कुछ अमीर लोगों को उन वस्तुओं की माँग करने के लिए आकृष्ट करती हैं क्योंकि उनका स्वामित्व उन्हें वैशिष्ट्य और अनन्यता प्रदान करता है। वेब्लेन ने ऐसे उपभोग को 'प्रदर्शन उपभोग' कहा। ऐसी वस्तुओं को वेब्लेन वस्तुएँ कहा जाता है। *यह वर्गीकरण कीमतों पर आधारित है।*

प्रमुख उपयोगों अथवा गुणधर्मों के आधार पर, वे वस्तुएँ जो उत्पादकों द्वारा अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए ख़रीदी जाती हैं, 'पूँजीगत वस्तुएँ' कहलाती हैं जबकि वे वस्तुएँ जो सीधे उपभोग कर ली जाती हैं, 'उपभोज्य वस्तुएँ' कहलाती हैं। प्रायः, एक एकल-प्रयोग उपभोज्य वस्तु (जैसे– चॉकलेट) जो कि एक इस्तेमाल में ही समाप्त हो जाती है, और एक स्थायी-प्रयोग उपभोज्य वस्तु जो कि कालांतर में उपभोग की जाती है (जैसे– फ्रिज़) में भेद किया जाता है। वस्तुएँ निःशुल्क अथवा कीमतांकित हो सकती हैं। वस्तुएँ निज-उपभोग अथवा बिक्री (जिन्हें प्रायः जिन्स कहा जाता है) के लिए उत्पादित की जा सकती हैं। निःशुल्क पदार्थों के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ निजी वस्तुएँ ही होती हैं।

यद्यपि सार्वजनिक वस्तुएँ लम्बे समय से विद्यमान रही हैं (संभवतः जब से 'समाज' बना है), परंतु सार्वजनिक एवं निजी वस्तुओं के बीच भेद की दृष्टि से सुस्पष्टता इतनी पुरानी नहीं है। यह पाया गया कि वह बाज़ार जो निजी वस्तुओं हेतु संसाधनों का एक दक्ष आवंटक रहा है, सार्वजनिक वस्तुओं के लिए ऐसा नहीं बन पाया। अगले भाग में हम इन सार्वजनिक वस्तुओं पर कुछ और चर्चा करेंगे।

वस्तुओं को बहुधा सेवाओं से भिन्न माना जाता है। वस्तुएँ मूर्त अर्थात् साकार होती हैं जबकि सेवाएँ अमूर्त। वस्तुओं को भण्डारित कर तदंतर उपभोग किया जा सकता है जबकि सेवाएँ उत्पादित किए जाते समय ही उपभोग कर ली जाती हैं। तथापि, यहाँ हमारी चर्चा में वस्तुओं में सेवाएँ भी शामिल रहेंगी। पदबंध 'सार्वजनिक सेवा' एक भिन्न अर्थ रखता है और इस इकाई में चर्चा से परे है।

4.3 सार्वजनिक वस्तुओं के अभिलक्षण

अर्थशास्त्र में सार्वजनिक वस्तु का अर्थ राजनीति शास्त्र में सार्वजनिक वस्तु के अर्थ से भिन्न होता है क्योंकि परवर्ती में इसका अर्थ 'लोकहित' मात्र होता है। सार्वजनिक वस्तु का बहुवचन रूप होता है और एक पारिभाषिक शब्दार्थ भी। देखने में आता है कि अनेक ऐसी वस्तुएँ होती हैं जिनको दूसरों के साथ खुशी-खुशी साझा किया जाता है, जैसे– खुले में हवा या धूप अथवा किसी झील में स्नान या फिर अपनी बैठक में एक साथ बैठकर टीवी देखना। ऐसा इसलिए होता है कि इन वस्तुओं का दूसरों द्वारा सहकालिक रूप से प्रयोग किए जाने पर मेरा उपभोग घटता अथवा समाप्त नहीं होता। ऐसी वस्तुएँ उपभोग में ग़ैर-प्रतिस्पर्धी कहलाती हैं। इस प्रकार, वस्तुओं को उपभोग में प्रतिद्वंद्विता के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। ऐसी वस्तुओं के लिए, जिनका उपभोग प्रतिद्वंद्वितापूर्ण होता है, जैसे– चाय, कॉफी, बिस्कुट, वस्त्र एवं आमोद-प्रमोद, हम $X = X_1 + X_2$ लिख सकते हैं, जहाँ X कुल आपूर्ति है और X_i जहाँ i=1, 2 उपभोक्ता *i* द्वारा उपभोग की मात्रा है। उन वस्तुओं के लिए, जिनका कि उपभोग ग़ैर-प्रतिद्वंद्वितापूर्ण होता है, जैसे वायु, खुले में धूप, स्ट्रीट-लाइट अथवा क्रिकेट मैच, हम $X_1 = X_1 = X_2$ लिख सकते हैं। इस स्थिति में, दोनों ही उपभोक्ता, यदि वे चाहें तो, समग्र वस्तु का उपभोग कर सकते हैं। प्रतिद्वंद्विता सहकालिक रूप से एक साथ उपभोग करने हेतु अन्य उपभोक्ताओं की अक्षमता है और ग़ैर-प्रतिद्वंद्विता उनकी ऐसा कर पाने हेतु क्षमता का नाम है।

ग़ैर-प्रतिस्पर्धी उपभोज्य वस्तुओं में वे वस्तुएँ आती हैं जिनके उपभोग से कुछ उपभोक्ताओं को अपवर्जित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, स्ट्रीट-लाइट के मामले में, किसी भी राहगीर को उसके उपभोग से अपवर्जित नहीं किया जा सकता। परंतु, क्रिकेट मैच के मामले में, उन लोगों को जिन्होंने टिकट नहीं ख़रीदा है अथवा पास प्राप्त नहीं किया है, अपवर्जित किया जा सकता है। उत्पादनकर्ता कुछ उपभोक्ताओं को अपवर्जित करने में सक्षम होते हैं। किसी विचाराधीन वस्तु के उपभोग से उपभोक्ताओं को अपवर्जित किया जा सकता है अथवा नहीं, यही मुख्य मुद्दा है।

निजी वस्तुओं में उपभोग में प्रतिद्वंद्विता और उपभोग से अपवर्ज्यता संबंधी दोनों गुण पाए

जाते हैं। असंगति (यथा, परस्पर विरोधी होने के गुण से), सार्वजनिक वस्तुएँ ग़ैर-प्रतिस्पर्धी और ग़ैर-अपवर्ज्य होती हैं (चित्र 4.1)। तथापि, अमिश्रित निजी वस्तुएँ और अमिश्रित सार्वजनिक वस्तुएँ भी होती हैं (जैसे कि अधिकांश मामलों में पूर्णेतर प्रतिद्वंद्विता और/अथवा पूर्णेतर अपवर्जना होती है। अमिश्रित निजी वस्तुएँ विभाज्य होती हैं और उपभोग की गई मात्राएँ भिन्न हो सकती हैं जबकि अमिश्रित सार्वजनिक वस्तुएँ अविभाज्य होती हैं और उपभोग की गई मात्रा सभी उपभोक्ताओं के लिए एकसमान होती है। कुछ विश्लेषकों ने ग़ैर-निरस्तता का गुण भी शामिल किया है क्योंकि उत्पादित सार्वजनिक वस्तुएँ संभाव्यतः जनसामान्य द्वारा निरस्त नहीं की जानी होती हैं (जैसे– बिजली)।

	अपवर्जना	
प्रतिद्वंद्विता	हाँ	नहीं
हाँ	**निजी वस्तुएँ** दवाएँ, वस्त्र, डबल रोटी, क़ॉफी	
नहीं		**सार्वजनिक वस्तुएँ** रक्षा, पुलिस, स्ट्रीट-लाइट, बाढ़-नियंत्रण

चित्र 4.1 : अमिश्रित निजी वस्तुओं और अमिश्रित सार्वजनिक वस्तुओं के अभिलक्षण

बोध प्रश्न 1 (दिये गये स्थान में अपना उत्तर 50–100 शब्दों में लिखें)

1) लाभ-वस्तुओं और हानि-वस्तुओं के कुछ उदाहरण दें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) वस्तुओं के वर्गीकरण हेतु कुछ आधार बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

3) वस्तुओं और सेवाओं के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4) उपभोग में ग़ैर-प्रतिद्वंद्विता (अथवा ग़ैर-प्रतिस्पर्ध्यता) का अर्थ समझाएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 सार्वजनिक वस्तुओं का सिद्धांत

किसी सार्वजनिक वस्तु की मात्रा अथवा विभिन्न उपभोक्ताओं को उसके वितरण [उसकी लागत पर कीमतों (अथवा करों) के रूप में विचार कर] निर्धारित करने के लिए अनेक विधियाँ अपनाई जा चुकी हैं। इनको आंशिक संतुलन प्रकार और सामान्य संतुलन प्रकार के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। पूर्ववर्ती मुख्यतः एरिक लिण्डल से जुड़ी है जबकि परवर्ती पॉल सैम्युल्सन से। यहाँ हम इन दो प्रतिदर्शों के दो सरलीकृत रूपांतरणों पर चर्चा करेंगे।

4.4.1 लिण्डल संतुलन

क्रेतागण किसी बाज़ार में निश्चित एक कीमत चुका कर अपनी-अपनी माँग अनुसूचियों के अनुसार माल की विभिन्न मात्राएँ प्राप्त कर लेते हैं। वैयक्तिक मात्राओं का कुल योग ही वस्तु की कुल आपूर्ति होती है। किसी अमिश्रित सार्वजनिक वस्तु के मामले में, हर व्यक्ति समान मात्रा प्राप्त करता है (अथवा उपभोग करता है) और कुल योग भी वही रहता है। चूँकि किसी भी सार्वजनिक वस्तु के लिए विभिन्न उपभोक्ताओं की माँग अनुसूचियाँ भिन्न-भिन्न होती है, हम उपभोक्ताओं द्वारा चुकाई जाने वाली कीमतों में भिन्नता की अपेक्षा कर सकते हैं।

चूँकि अनेक सार्वजनिक वस्तुओं का उत्पादन किए जाने की आवश्यकता पड़ती है, इसमें लागत शामिल होती है। उत्पादन लागत अनिवार्यतः विभिन्न उपभोक्ता-नागरिकों पर प्रमाणित की जा सकती है। परंतु प्रभाजन हेतु नियम एकसमान नहीं हो सकता। नट विकसैल ने प्रस्ताव रखा कि – (i) प्रत्येक सार्वजनिक वस्तु का वित्त-पोषण किसी विलग पहचाने जाने योग्य कर द्वारा किया जाना चाहिए और (ii) समाज के सभी सदस्यों को ही आपूर्ति की जाने वाली मात्रा एकमत से निर्धारित करनी चाहिए। इसको 'स्वैच्छिक विनिमय निदर्श' के रूप में जाना जाता है। इस विचार को एरिक लिण्डल द्वारा आगे ले जाया गया। उनका समाधान चित्र 4.2 में आरेखीय रूप से दर्शाया गया है। लिण्डल का दृष्टिकोण निम्नवत् स्पष्ट किया जा सकता है।

माना किसी सार्वजनिक वस्तु के केवल दो ही उपभोक्ता है– A और B इस सार्वजनिक वस्तु (माना, स्ट्रीट-लाइट) का कितना उत्पादन किया जाए और किस प्रकार इसकी लागत प्रभाजित की जाए? मान लीजिए, D_A और D_B उनके माँग वक्र हैं, जो कि उनकी सीमांत उपयोगिताएँ दर्शाते हैं। माना X-अक्ष निरपेक्ष मानों में बाएँ से दाएँ मात्रा दर्शाता है। जबकि Y-अक्ष वह कीमत (अथवा) सीमांत उपयोगिता दर्शाता है जो वे इस सार्वजनिक वस्तु की किसी प्रदत्त मात्रा हेतु चुकाने के इच्छुक हैं। भाषा में अंतर पर ध्यान दें– निजी वस्तुओं के मामले में हम कहते हैं– *'किसी प्रदत्त कीमत हेतु कितनी मात्रा'*, परंतु सार्वजनिक वस्तु के मामले में हम कहते हैं– *'किसी प्रदत्त मात्रा हेतु कितनी कीमत'*। इसका अर्थ है कि हम किसी भी निजी वस्तु के लिए वैयक्तिक माँग वक्रों के क्षैतिज योग का प्रयास करते हैं परंतु किसी सार्वजनिक वस्तु के लिए हम शीर्ष योग करते हैं।

चित्र 4.2 में, हम D_A, D_B और D_{A+B} (D_A और D_B के लम्बवत् योगफल स्वरूप) खींचते हैं। सरल प्रतिपादन की दृष्टि से, ये सरल रेखाएं हैं। आइए, सीमांत सामाजिक लागत (MSC) को निरूपित करता आपूर्ति वक्र S खींचें। हम देखेंगे कि सार्वजनिक वस्तु OQ मात्रा में उत्पादित की गई है और जबकि किसी वस्तु के लिए A और B को क्रमशः OP_A और OP_B कीमतें चुकानी पड़ती हैं [जो कि उनके सीमांत लाभ (अथवा उपयोगिताएँ) MB_A और MB_B निरूपित करते हैं], हम लिख सकते हैं–

$$MSC = MB_A + MB_B \qquad (4.1)$$

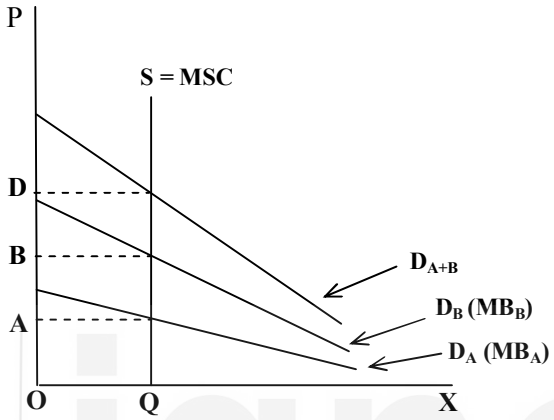

चित्र 4.2 : सार्वजनिक वस्तु X की मात्रा एवं वैयक्तिक कीमतों (करों) का निर्धारण

किसी निजी वस्तु के लिए, $MSC = MB_A = MB_B$ जहाँ Q Q_A और Q_B का योगफल होगा (जो कि यहाँ नहीं दर्शाए गए हैं) जबकि D_A और D_B को क्षैतिज रूप से जोड़ा जाएगा।

4.4.2 सैम्युल्सन का सार्वजनिक व्यय संबंधी सिद्धांत

सैम्युल्सन ने एक अमिश्रित सार्वजनिक वस्तु के उदाहरण पर विचार किया और इस प्रकार की सार्वजनिक वस्तु को 'सामूहिक उपभोग वस्तुओं' की संज्ञा दी। निजी वस्तुओं से तुलना करते हुए, उन्होंने सार्वजनिक वस्तुओं और निजी वस्तुओं के सहकालिक रूप से दक्ष उत्पादन हेतु इष्टतमता दशाएँ निर्दिष्ट कीं। उन्होंने इसे किसी भी संस्थानिक प्राधार को प्रयोग किए बिना ही 'सार्वजनिक व्यय का अमिश्रित सिद्धांत' कहा। इस प्रतिदर्श की एक संक्षिप्त व्याख्या निम्नवत् है।

माना X सार्वजनिक वस्तु (राष्ट्रीय सुरक्षा) है और Y निजी वस्तु। अप्रतिद्वंद्विता के गुण से, X का उपभोग A और B दोनों उपभोक्ताओं द्वारा समान रूप से एवं सहकालिक रूप से किया जाता है और इसीलिए X को अनुलिखित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरी ओर, Y चूँकि एक निजी वस्तु है, इसे दो उपभोक्ताओं के बीच भिन्न-भिन्न मात्राओं में बाँटा जाता है और बचत शून्य रहती है। जिससे $Y = Y_A + Y_B$; यथा, इसे पूर्णतः उपभोग कर लिया जाता है और बचत शून्य रहती है। माना PP उत्पादन संभावना वक्र (रूपांतरण वक्र अथवा अवसर लागत वक्र) है– Y का उत्पादन जितना अधिक होता है, X का उत्पादन उतना ही कम हो जाता है और इसका विपरीत भी सत्य है। $F(X, Y) = 0$ उत्पादन संभावना वक्र है। सीमांत रूपांतरण दर (MRT) Y की कुछ मात्रा को हानि पर बेचकर X की एक अधिक इकाई प्राप्त करने की अवसर लागत को निरूपित करता है। सरल रेखा PPC के साथ, MRT सभी बिंदुओं पर एक छोर से दूसरे छोर तक एकसमान है।

वैयक्तिक उपयोगिताएँ सार्वजनिक वस्तु X की सामान्य मात्रा और Y की वैयक्तिक मात्राओं के फलन हैं; यथा, $U_A = f(X, Y_A)$ और $U_B = g(X, Y_B)$. U_A और U_B उनके समाधिमान वक्रों के मानचित्रों द्वारा निरूपित किए जाते हैं (देखें चित्र 4.3)। माना A_iA_i और B_jB_j उनके समाधिमान-वक्र समुच्चयों को निरूपित करते हैं। यदि A का

उपयोगिता स्तर नियत हो और B की उपयोगिता अधिकतमीकृत, तो अर्थव्यवस्था पैरेटो रीति से उपभोग दक्षता लब्ध कर लेती है। चलिए, A का उपयोगिता स्तर U_{A1} पर निर्धारित करते हैं और उपभोक्ता A के लिए केवल एक समाधिमान वक्र A_1A_1 खींचते हैं। सार्वजनिक वस्तु अर्थात् X के किसी प्रदत्त स्तर हेतु हम $Y_2 = Y - Y_1$, ज्ञात करेंगे, जो कि उपभोक्ता B हेतु उपलब्ध उपभोक्ता पिटक हेतु रेखापथ दर्शाएगा, बशर्ते A हेतु समाधिमान वक्र A_1A_1 पर हो। इसे प्राप्त करने के लिए, कुछ लम्बवत् रेखाएँ खींचें और किसी X के लिए, $Y_2 = Y - Y_1$ ज्ञात करें। इन बिंदुओं को मिलाएँ और P_BP_B वक्र को उपभोक्ता B हेतु 'उपलब्धता वक्र' की संज्ञा दें। उच्चतम संभावना समाधिमान वक्र

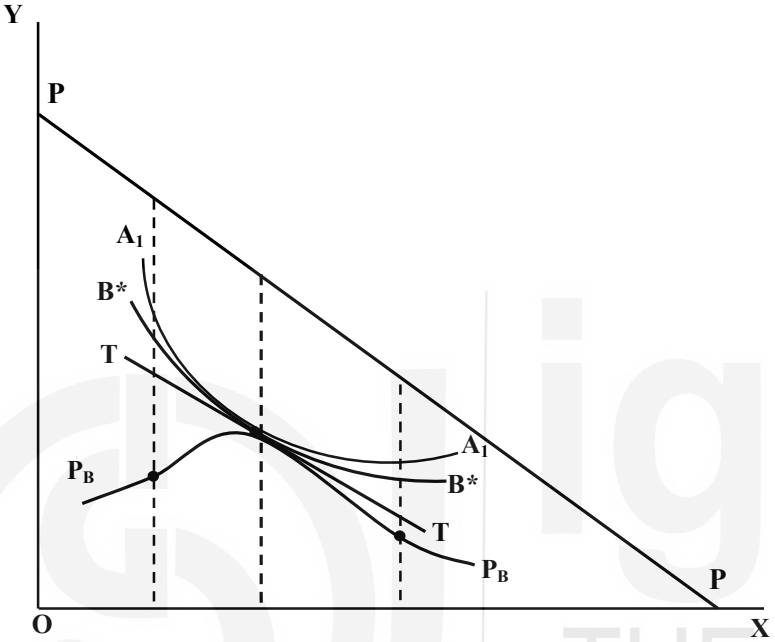

चित्र 4.3 : उत्पादन संभावना वक्र और अनधिमान वक्र से उपलब्धता वक्र की व्युत्पत्ति

B*B* प्राप्य खींचिए, जो कि उपलब्धता वक्र के साथ स्पर्श रेखा हो। यह B (MRS_B) हेतु 'सीमांत प्रतिस्थापन दर' देगा, जो कि X की एक अधिक इकाई लब्ध करने के लिए Y द्वारा B को हानि पर बेचना होगा। जबकि A की उपयोगिता हेतु एक अन्य स्तर के लिए, एक अन्य उपलब्ध वक्र होगा और इससे B^+B^+ के रूप में उच्चतम संभव समाधिमान वक्र प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार, विभिन्न X's पर भिन्न-भिन्न MRS_B's होंगे। B के उपयोगिता स्तर निर्धारित कर इसी प्रकार के अभ्यास से, हम विभिन्न X's हेतु MRS_A की एक समग्र अनुसूची प्राप्त कर सकते हैं। चूँकि A और B दोनों को Y_A और Y_B द्वारा कुछ भी उपभोग किए जाने की स्थिति में X की एकसमान मात्रा ही, उपभोग करनी होती है, MRS_A और MRS_B को लम्बवत् जोड़ा जा सकता है। अतः, हम लिख सकते हैं –

$$MRS = MRS_A + MRS_B \qquad (4.2)$$

कोई भी आरेख तब चित्र 4.3 की रेखाओं पर खींचा जा सकता है जहाँ MRT मात्र MSC होगा और MRS_A, MRS_B, और MRS क्रमशः D_A, D_B, और D_{A+B} का स्थान लेंगे क्योंकि सार्वजनिक वस्तु X प्राप्त करने की कीमत निजी वस्तु Y के पदों में है। दक्ष प्रावधान के लिए –

$$MRT = \Sigma MRS = MRS_A + MRS_B \qquad (4.3)$$

यहाँ ΣMRS और MRT वक्रों का प्रतिच्छेदन बिंदु उत्पादित किए जाने वाले X और Y की मात्रा और Y_A व Y_B के बीच उसका विभाजन दर्शाता है।

सैम्युल्सन एक अनधिमान वक्र की आकृति वाले किसी सामाजिक क्षेम फलन (अथवा

वृहद् उपयोगिता फलन) के प्रयोग पर ही बल देते हैं। उत्पादन संभावना फलन और वृहद् उपयोगिता फलन के बीच स्पर्श-बिंदु सामाजिक क्षेम फलन की यथातथ्य आकृति दर्शाता है (जो कि आर्थिक की बजाय नैतिक सरोकारों से कहीं अधिक निर्धारित किया जाता है)।

4.5 निजेतर वस्तुएँ

चित्र 4.1 में, दो रिक्त बक्से रेखा खींचकर काट दिए गए मानो या तो प्रतिस्पर्धा एवं अपवर्जन दोनों ही गुणधर्म एक साथ विद्यमान हों या फिर कोई भी न हो। परंतु ऐसी वस्तुएँ भी होती हैं जिनमें इन दोनों में से एक ही विद्यमान होता है और दूसरा नहीं। अतः, हम इन दो बक्सों को भी भर सकते हैं (देखें चित्र 4.4)। आमतौर पर, प्रतिस्पर्ध्येतर

प्रतिद्वंद्विता अपवर्जन	हाँ	नहीं
हाँ	**निजी वस्तुएँ** दवाएँ, वस्त्र, ब्रैड, कॉफ़ी	**सामान्य वस्तुएँ** वन, झीलें, सागर तट (मत्स्य भंडार)
नहीं	**क्लब वस्तुएँ** शुल्क मार्ग, स्कूल, थियेटर	**सार्वजनिक वस्तुएँ** रक्षा, पुलिस, स्ट्रीट-लाइट, बाढ़-नियंत्रण

चित्र 4.4 : प्रतिद्वंद्विता एवं अपवर्जना के आधार पर वस्तुओं का चतुरायामी वर्गीकरण

उपभोग परंतु अपवर्जन वाली वस्तुओं को 'क्लब वस्तुएँ' और प्रतिस्पर्ध्य उपभोग वाली एवं अपवर्जनेतर वस्तुओं को सामान्य (पूल) वस्तुएँ/संसाधन कहा जाता है। ऐसी वस्तुएँ भी विद्यमान हैं जहाँ आंशिक प्रतिस्पर्धा और/अथवा आंशिक अपवर्जन विद्यमान हो सकता है। वस्तुतः, शून्य से लेकर पूर्ण तक प्रतिद्वंद्विता का अस्तित्व भी देखा जा सकता है। तद्नुसार, दो बक्सों अथवा चार बक्सों की बजाय एक समग्र स्थान को आबद्ध करते चार स्तंभ दृष्टिगत होते हैं। वस्तुएँ इस समग्र स्थान में किसी भी बिंदु पर विद्यमान हो सकती हैं, जो कि प्रतिद्वंद्विता एवं अपवर्जन के स्तर पर निर्भर करेगा (देखें चित्र 4.5)।

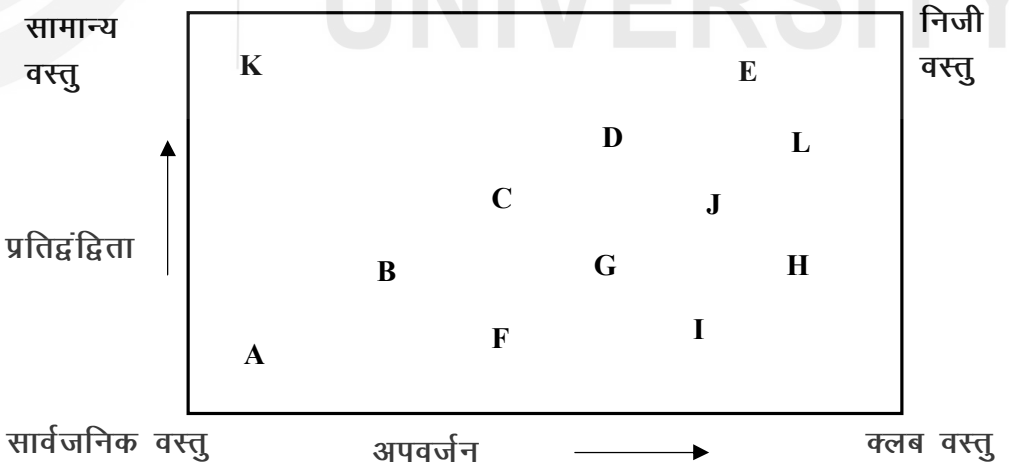

चित्र 4.5 : वास्तविक जगत में वस्तुएँ

4.5.1 क्लब वस्तुएँ

वे वस्तुएँ जिनमें प्रतिद्वंद्विता महत्त्वहीन होती है, परंतु उपभोक्तागण अपवर्जित किए जा सकते हैं, अर्ध-सार्वजनिक वस्तुएँ अथवा सार्वजनिक-प्राय वस्तुएँ कहलाती हैं। जेम्स बॅकनन ने इनको 'क्लब वस्तुओं' की संज्ञा दी है (क्योंकि क्लब के सदस्यों को कुछ

विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं जो कि दूसरों को प्राप्य नहीं होते)। शुल्क मार्ग, स्विमिंग पूल, सार्वजनिक पार्क और संग्रहालय इसी श्रेणी में आते हैं। यहाँ तक कि स्कूल भी इसी श्रेणी में आता है (जैसा कि प्रतिलिप्याधिकार-प्राप्त कृतियों के मामले में होगा, जिनके किसी के भी द्वारा प्रयोग की सीमांत लागत नहीं होती)। कुछ विश्लेषक यूरोपीय संघ (EU) सेवाओं को क्लब वस्तुएँ मानते हैं क्योंकि केवल उसके सदस्य ही कुछ विशेष सेवाओं का आनंद ले सकते हैं। ऐसी वस्तुएँ किसी क्लब/सार्वजनिक अभिकरण द्वारा निजी रूप से प्रदान की जा सकती हैं। किसी आवास समिति की सुरक्षा निजी रूप से ही प्रदान की जाती है (क्योंकि यह उचित ही है कि आवास प्राप्त जन कोई संघ बनाएँ और निजी आधार पर सुरक्षा प्रबंध करें, जिसकी लागत उन लोगों द्वारा ही वहन की जाए), परंतु शुल्क मार्ग और सार्वजनिक संग्रहालय प्रायः किसी सार्वजनिक अभिकरण द्वारा ही चलाए जाते हैं।

जब अतिरिक्त उपभोक्ता को किसी सार्वजनिक वस्तु प्रदान करने की सीमांत लागत (न कि उत्पादन, जो कि इकाइयों के पदों में होता है) बढ़ने लगती है, माना कि जब उपभोक्ता संख्या N* तक पहुँच जाती है, तो हम इसे 'संकुल्य सार्वजनिक वस्तु' कहते हैं। उदाहरण के लिए, जब सार्वजनिक मार्ग पहले से अधिक प्रयोगकर्ताओं को आकर्षित करने लगता है तो यातायात धीमा हो जाता है और दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है, और इस प्रकार, और अधिक उपभोक्ताओं को समायोजित करने की लागत बढ़ जाती है। तब मार्ग कर लगाकर उसके प्रयोग पर नियंत्रण करना सार्थक हो जाता है।

4.5.2 विशेष गुण वस्तुएँ एवं अवगुण वस्तुएँ

अर्थशास्त्र में वस्तुएँ पण्य वस्तुएँ या माल इसलिए कहलाती हैं कि उनका प्रयोग या उपभोग उपभोक्ताओं को संतुष्टि देता है, भले ही वह अनिवार्यतः उपयोगी न हो। उपभोक्तागण अपने उपभोग के लिए संभवतः किंचित् ही कृतज्ञता रखते हों। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि किसी को दवा पसंद न हों, परंतु वे उपयोगी तो होती हैं; दूसरी ओर, किसी को धूम्रपान पसंद हो सकता है, जबकि वह उपयोगी नहीं होता। इसी प्रकार, बच्चे टीकाकरण का महत्त्व शायद ही समझते हों, परंतु सरकार संभावित अक्षमताओं एवं खतरनाक बीमारियों से रक्षार्थ बच्चों को टीकाकृत करवाने के लिए उनके माता-पिताओं को प्रायः प्रोत्साहित करती रहती है।

रिचर्ड मसग्रेव ने ऐसी वस्तुओं को विशेष गुण वस्तुओं के रूप में अभिव्यक्ति दी। उपभोक्ताओं से ऐसी वस्तुओं का उपभोग करवाया जाता है और सरकार उन्हें बाज़ार के माध्यम से प्रदात मात्रा से आगे बढ़कर सार्वजनिक बजट से भी प्रदान करती है। यह, तद्नुसार, उपभोक्ता संप्रभुता की धारणा में हस्तक्षेप करता है क्योंकि यहाँ एक प्रकार पितृ-व्यवहारपूर्ण अधिरोपण दृष्टिगत होता है। परंतु समाज अथवा सरकार की नज़रों में विशेष गुण वस्तुओं का उपभोग (जैसे– प्रारंभिक शिक्षा, जनस्वास्थ्य, सार्वजनिक पुस्तकालय एवं संग्रहालय) जीवनकाल परिप्रेक्ष्य से उपभोक्ता और समाज, दोनों के लिए उपयोगी होता है। ऐसी वस्तुएँ एक प्रकार की निजी वस्तुएँ होती हैं परंतु बाज़ार उस सीमा तक उनकी आपूर्ति नहीं कर सकता जितनी कि समाज द्वारा उनकी माँग की जाती है। ऐसे मामलों में, बाज़ार लुप्त नहीं वरन् अपरिपूर्ण होते हैं। अतएव, संपूर्ति हेतु सरकार (अथवा किसी अन्य सामाजिक समूह) को ही आगे आना पड़ता है।

विशेष गुण वस्तुओं के निजी उपभोग में शेष समाज के लिए अनेक सकारात्मक बाह्यताएँ होती हैं। किसी भी शिक्षित व्यक्ति से अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त व्यवहार की अपेक्षा की जाती है और कोई भी टीकाकृत व्यक्ति सहयात्रियों को कोई हानि नहीं पहुँचाता। तद्नुसार, इसमें दो गुण दृष्टिगत होते हैं– एक तो यह उपभोक्ता के लिए उपयोगी होता है (जो कि शायद उसके लाभों को कम आँकते हों); दूसरे, यह समाज के लिए (यद्यपि केवल कुछ लोगों द्वारा ही उपभोग किया जाता है) लाभकारी होता है। अर्थशास्त्री इस पहलू को इतना महत्त्वपूर्ण मानते हैं कि वे विशेष गुण वस्तुओं को आर्थिक सहायता प्रदान किए जाने योग्य बताते हैं। दूसरों का तर्क है कि सार्वजनिक

अर्थसाहाय्य एक तदर्थ उपाय मात्र ही होना चाहिए क्योंकि कालांतर में लोग उनका महत्त्व समझेंगे और उनके अंतर्निहित मूल्य की वजह से उनकी माँग करेंगे। सरकार उनके उपभोग को प्रोत्साहन देने के लिए जन-अभियान भी चलाती है। विस्तारपूर्वक, ऐसी वस्तुएँ भी हो सकती हैं जो हानिकर हों परंतु लोग उनका उपभोग करते हैं क्योंकि वे उन वस्तुओं को पसंद करते हैं। धूम्रपान-सामग्री, स्वापक, द्यूतक्रीड़ा एवं मदिरा जैसी वस्तुएँ अवगुण वस्तुएँ कहलाती हैं। कुछ लोग उन्हें गुण हानि-वस्तुएँ कहते हैं जो इतना ठीक नहीं हैं क्योंकि उनका उपभोग करने वाले लोग उन्हें अच्छा मानते हैं।

इस तथ्य के अलावा कि ऐसी वस्तुएँ उपभोक्ता के लिए हानिकर होती हैं, वे नकारात्मक बाह्यताएँ भी दर्शाती हैं। उदाहरण के लिए, बीड़ी-सिगरेट पीने वाला व्यक्ति निष्क्रिय धूम्रपान का कारण बनता है और पियक्कड़ व्यक्ति लोगों के बीच उपद्रव कर सकता है। इस प्रकार, ये वस्तुएँ जो अवगुण दर्शाती हैं– एक, वे उपभोक्ता के लिए हानिकर होती हैं और दूसरे, वे नकारात्मक बाह्यता उत्पन्न करती हैं। सरकार प्रायः इनके उपभोग को हतोत्साहित करने के लिए कर लगाती है और उनके प्रयोग के विरुद्ध सामाजिक अभियान चलाती है।

4.6 मुफ्तखोरी की समस्या

अमिश्रित सार्वजनिक वस्तुओं हेतु ऊपर प्रस्तुत किए गए समाधान समस्त सामाजिक माँग का ध्यान रखते हैं। तथापि, किसी भी उपभोक्ता के लिए अपनी वास्तविक वरीयता प्रकट करने हेतु कोई प्रोत्साहन नहीं होता यदि वह अच्छी तरह जानता हो कि वस्तु का दाम न चुकाने पर भी उसे उसके उपभोग से अपवर्जित नहीं किया जा सकता। दूसरे शब्दों में, कुछ लोग शायद बिल्कुल भी नहीं प्रकट न करें जबकि कुछ अन्य अपनी वास्तविक वरीयता कम करके बता सकते हैं; यथा *प्रकट अधिमान* सदा वास्तविक अधिमान से कम ही होगा। इस प्रकार, वास्तविक माँग वक्र अवकलित करने का कोई तरीका नहीं है। इसे ही निःशुल्क सवारी या मुफ़्तख़ोरी की समस्या कहा जाता है जो कि बाज़ार विफलता की ओर प्रवृत्त करती है। हर उपभोक्ता के पास मिथ्या संकेत देने और किसी के वस्तु उपभोग की कम आवश्यकता होने का स्वांग करने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन होता है। विक्रेन्द्रीकृत बाज़ार कीमतांकन प्रणाली निःशुल्क सवार समस्या के रहते किसी भी सार्वजनिक वस्तु के प्रयोग का इष्टतम स्तर निर्धारित करने में कोई मदद नहीं कर सकती।

लोग निजी रूप से सहमत हो सकते हैं कि वायुमण्डल या वातावरण सुधरना ही चाहिए परंतु एक बार प्रदूषण दुरुत्साहन शुल्क में अंशदान देने के लिए कहे जाने पर वे शायद ही आगे आएँ। यह समस्या अधिक विकट हो जाती है जब किसी सार्वजनिक वस्तु के उपभोक्ताओं की संख्या बहुत अधिक हो क्योंकि सौदेबाजी की लेन-देन की लागत ऊँची होती है। यदि संख्या कम हो तो समस्या इतनी विकट नहीं होगी। उदाहरण के लिए, यदि केवल दो उपभोक्ता A और B ही हों, जहाँ प्रत्येक को अच्छी तरह पता हो कि अपना वास्तविक अधिमान इंगित करने में सत्यवादी न होने पर आपूर्ति शून्य हो जाएगी तो उनके पास अपने वास्तविक अधिमान प्रकट करने हेतु उचित कारण होगा, बेशक A और B दोनों अपने अधिमानों में भिन्न-भिन्न प्रबलताएँ दर्शाने वाले हों। बाज़ार-तंत्र अमिश्रित सार्वजनिक वस्तुओं की यथेष्ट रूप से आपूर्ति करने में विफल प्राय रहता है क्योंकि उद्यमी वृंद उपभोग-बिंदु पर उपभोक्ताओं से क़ीमत माँगने की असंभवता ज्ञात होने पर, शायद ही बाज़ार में प्रवेश करना चाहता है। यह एक लुप्त बाज़ार का मामला बन जाता है।

चूँकि स्वैच्छिक विनिमय प्रतिदर्श (यथा, किसी निजी वस्तु हेतु बाज़ार) भली-भाँति कार्य नहीं करता, यहां प्रावधान करने और आम राजस्व से लागत चुकाने के लिए सरकारों का आह्वान किया जाता है। हम परार्थपरता हेतु लोगों से अनुरोध कर सकते हैं जिससे लोग दूसरों के लिए कीमत चुकाते हैं और कुछ वस्तुओं को क्लब वस्तुओं में बदला जा

सकता है (यथा, निजी रूप से चलाए जाने वाले और केवल उन सदस्यों द्वारा क़ीमत चुकाए जाने वाले जो उससे लाभान्वित होते हों)। तथापि, दीपघर जैसी वस्तुएँ विशुद्ध सार्वजनिक वस्तुएँ होती हैं, हालाँकि हो सकता है कि उन्हें निजी रूप से चलाया जाता हो।

4.7 स्थानीय एवं वैश्विक वस्तुएँ

स्पर्ध्येतर उपभोग और उपभोग से ग़ैर-अपवर्ज्यता के पदों में सार्वजनिक वस्तु की अवधारणा अनेक प्रसंगों में अपनी अभिव्यक्ति पाती है। ऐसी एक सार्वजनिक वस्तु है– राष्ट्रीय संरक्षा का प्रावधान, जो कि एक विशुद्ध मानव-निर्मित सार्वजनिक वस्तु है। यह दावे के साथ कहा गया है कि लोग इस प्रकार की किसी वस्तु के लिए अपने वास्तविक अधिमान प्रकट नहीं करेंगे क्योंकि उनका मानना है कि वे अपना उपभोग करेंगे ही (उसके प्रावधान की लागत में अंशदान दिए बिना ही) क्योंकि उन्हें अपवर्जित करना नितांत असंभव ही है। दूसरे शब्दों में, ऐसी वस्तुओं के लिए बाज़ार लुप्त होता है। वस्तुतः, ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे उपभोक्तागण अपने अधिमान प्रकट कर सकें।

1960 के दशकांत से, अर्थशास्त्रियों ने पाया है कि ऐसी अनेक सार्वजनिक वस्तुएँ हैं जिनके अभिलक्षण उपर्युक्त प्रकार की सार्वजनिक वस्तुओं जैसे ही हैं परंतु वे अपनी प्रकृति में वैश्विक अथवा अंतर्राष्ट्रीय हो सकती हैं। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, आदि ऐसी सार्वजनिक वस्तुओं (हानि वस्तु) के ही उदाहरण हैं। इस प्रकार के घटना-चक्र ने 'स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं' और 'वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं' विषयक भेद को जन्म दिया है।

4.7.1 स्थानीय सार्वजनिक वस्तुएँ

अपनी स्थानीय पहुँच वाली कोई भी सार्वजनिक वस्तु एक स्थानीय वस्तु कहलाती है। इसके उदाहरण हो सकते हैं– स्ट्रीट-लाइट, सामुदायिक रेडियो, नगर पार्क, सफ़ाई, कूड़ा-एकत्रण, इत्यादि। ये वस्तुएँ गैर-प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ गैर-अपवर्ज्यता संबंधी अभिलक्षण दर्शाती हैं, परंतु पहुँच इस अर्थ में स्थानीय होती है कि केवल क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोग ही अपवर्जित नहीं होते हैं। ये, तद्नुसार, क्लब वस्तुओं के सदृश होती हैं। तथापि, 1950 के दशक में, चार्ल्स टाइबूट ने क्षेत्राधिकार विकल्प (कुछ शर्तों के साथ) चयन के माध्यम से उपभोक्ताओं द्वारा वास्तविक अधिमान प्रकटन के साथ निवासियों को आकर्षित करने के लिए नागरिक अधिकार क्षेत्रों के बीच स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं और प्रतिस्पर्धा विषयक रोचक अवधारणाएँ प्रस्तुत की थीं।

4.7.2 वैश्विक सार्वजनिक वस्तुएँ

ज्ञान को काफ़ी लम्बे समय बाद एक वैश्विक सार्वजनिक वस्तु के रूप में पहचान मिली क्योंकि पृथ्वी पर किसी भी व्यक्ति को व्यक्ति और समाज को प्राप्त ज्ञान से होने वाले लाभ से सरलता से अपवर्जित नहीं किया जा सकता है। अपितु ज्ञानोदय के साथ, लोग ऐसी ढेरों वस्तुएँ खोज रहे हैं जिनकी विश्वव्यापी पहुँच होती है। वस्तुतः, वे सही अर्थों में पारदेशीय और सीमापारीय होती हैं। वैश्वीकरण और अनेक देशों के विघटन के कारण वैश्विक और पारदेशीय सार्वजनिक वस्तुओं में वृद्धि देखी गई है। उनके विषय में हमारी जानकारी हाल के वर्षों में ही बढ़ी है। प्रारंभ में, नए उत्पाद एवं प्रौद्योगिकियाँ सीमापारीय अथवा वैश्विक प्रभावों वाली गतिविधियों की संख्या बढ़ा रहे हैं।

स्मरण करें कि क्लोरोफ़्लोरोकार्बन (CFCs) व संबद्ध यौगिक प्रशीतन, प्रणोदन एवं शोधन हेतु व्यापक रूप से प्रयोग किए जाते थे। उन्होंने समताप मंडलीय ओज़ोन परतों का अवक्षय किया जिससे विश्वव्यापी पराबैंगनी विकिरण के प्रभाव पहले से कहीं अधिक हो गए। तथापि, जैसे ही सीमापारीय मुद्दों (जैसे वातावरण में कार्बन संचय) को पहचानने हेतु विधियाँ उन्नत हुई; इन समस्याओं के वैश्विक पहलुओं संबंधी हमारी जागरूकता भी बढ़ी। शान्ति, सुरक्षा, स्वच्छ पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन प्रशामन, ओज़ोन परत अवक्षय

परिरोधन, आदि सभी इसी श्रेणी में आते हैं। इनसे सभी देशों, राष्ट्रों, लोगों एवं पीढ़ियों तक फैलने की अपेक्षा की जाती है। तथापि, ऐसी सार्वजनिक वस्तुओं के लिए जो चाहे राष्ट्रीय पहुँच रखती हों या फिर स्थानीय, आपके पास सरकार होती है जिसके समक्ष आप उसके प्रावधान की मांग लेकर जा सकते हैं। वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के मामले में, ऐसी कोई सरकार नहीं होती। हमें एक एक मसले पर समझौता बातचीत करनी होती है और किसी क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सर्वसम्मति पर पहुँचना होता है।

बोध प्रश्न 2 (दिये गये स्थान में अपना उत्तर 50–100 शब्दों में लिखें)

1) किसी सार्वजनिक वस्तु के मामले में सामाजिक माँग वक्र ज्ञात करने के लिए वैयक्तिक माँग वक्र किस प्रकार जोड़े जाते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) लिण्डल प्रतिदर्श की सीमांत दशाएँ बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

3) लिण्डल प्रतिदर्श और सैम्युल्सन प्रतिदर्श के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4) संकुल्य सार्वजनिक वस्तु क्या होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

5) कोई क्लब वस्तु सार्वजनिक वस्तु से किस प्रकार भिन्न होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

6) विशेष गुण वस्तुओं और अवगुण वस्तुओं को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

7) मुफ्तखोरी समस्या क्या है? किसी सार्वजनिक वस्तु के दक्ष प्रावधान हेतु इसके क्या निहितार्थ होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

8) स्थानीय सार्वजनिक वस्तुएँ क्या होती हैं? कुछ उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9) यदि स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं की यथेष्ट किस्में विद्यमान हों तो किस प्रकार की प्रतिस्पर्धा जन्म ले सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

10) वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के प्रादुर्भाव के कारण बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

4.8 सार संक्षेप

यह इकाई 'लाभ-वस्तुओं' एवं 'हानि-वस्तुओं' संबंधी संकल्पनाओं, जो कि अर्थशास्त्र में अपने विशिष्ट रूप में पहचानी जाती है, के परिचय के साथ आरंभ हुई। तदोपरांत, आय एवं कीमतों के आधार पर वस्तुओं के वर्गीकरण को सपष्ट किया गया। उन अभिलक्षणों का अवलोकन करते हुए जो किसी वस्तु को अमिश्रित सार्वजनिक वस्तु के रूप में चिह्नित करते हैं, हमने देखा कि सभी वस्तुएँ विशुद्ध रूप से निजी अथवा विशुद्ध रूप से सार्वजनिक नहीं होती हैं। कुछ ग़ैर-प्रतिस्पर्धी वस्तुएँ भी होती हैं, जहाँ उपभोक्ताओं को सरलता से अपवर्जित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, अपवर्जन और प्रतिस्पर्धता आवश्यक नहीं कि शून्य अथवा पूर्ण हों ही। इससे क्लब वस्तुओं के रूप में वस्तुओं की मान्यता आवश्यक हो जाती है। इसके बाद गुण वस्तुओं के विषय पर चर्चा हुई, जो कि वैयक्तिक रूप से उपभोग की जाती हैं परंतु सामाजिक रूप से उपयोगी होती हैं।

इस इकाई में, उपभोक्ताओं द्वारा अपने वास्तविक अधिमान प्रकट किए जाने पर विचाराधीन सार्वजनिक वस्तु की इष्टतम मात्रा ज्ञात करने हेतु अपने सरलीकृत रूप में आंशिक संतुलन प्रतिदर्श (लिण्डल) और सामान्य संतुलन प्रतिदर्श (सैम्युल्सन) के अनुप्रयोग पर चर्चा की गई। तथापि, अपवर्जन की असंभवता के कारण, हो सकता है कि उपभोक्तागण अपने अधिमान बिल्कुल भी प्रकट न करें, जिससे निःशुल्क सवार समस्या उत्पन्न होती है। इकाई के अंत में, सार्वजनिक वस्तुओं की अवधारणा के विस्तार, यथा, स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं (जो कि नागरिक क्षेत्राधिकारों में प्रतिस्पर्धा के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण होती हैं) तथा वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं (जो कि प्रौद्योगिकीय एवं राजनीतिक घटनाक्रम से उत्पन्न होती हैं) पर चर्चा की गई।

4.9 शब्दावली

क्लब वस्तुएँ : प्रतिस्पर्ध्येतर या ग़ैर-प्रतियोगी उपभोग वस्तुएँ जिन पर किसी अनन्य समूह द्वारा उपभोग के लिए प्रतिबंध लगाया जा सकता है।

संकुल्य सार्वजनिक वस्तुएँ : सार्वजनिक वस्तुओं के मामले से भिन्न, जहाँ किसी अतिरिक्त उपभोक्ता के आ जाने से कोई अतिरिक्त लागत उपगत नहीं की जाती है, कुछ मामलों में, उपभोक्ता समूह के आकार से परे, सीमांत लागत बढ़नी शुरू हो जाती है। ऐसी सार्वजनिक वस्तुओं को ही संकुल्य सार्वजनिक वस्तुएँ कहा जाता है।

अवगुण वस्तुएँ : वे वस्तुएँ जो उपभोक्तागण पसंद तो करते हैं मगर वे वास्तव में हानिकारक होती हैं और इस कारण उनके उपभोग को हतोत्साहित किया जाता है, अवगुण वस्तुएँ कहलाती हैं।

मुफ्तखोरी समस्या : यदि प्रदाताओं के लिए किसी व्यक्ति को किसी वस्तु विशेष के उपभोग से अपवर्जित करना संभव न हो तो उस व्यक्ति के पास उसके प्रावधान की लागत साझा

किए बिना ही उसको वस्तु का निःशुल्क या मुफ़्त में ही प्रयोग कर लिये जाने का प्रलोभन होता है। इसको निःशुल्क सवार समस्या कहा जाता है।

वैश्विक सार्वजनिक वस्तुएँ : वैश्विक पहुँच अथवा वैश्विक निहितार्थों वाली सार्वजनिक वस्तुओं को वैश्विक सार्वजनिक वस्तुएँ कहा जाता है।

स्थानीय सार्वजनिक वस्तुएँ : केवल स्थानीय पहुँच वाली सार्वजनिक वस्तुएँ, जो स्थानीय जनसमुदाय द्वारा स्पर्ध्येतर उपभोग तक सीमित होती हैं, स्थानीय सार्वजनिक वस्तुएँ कहलाती हैं।

विशेष गुण वस्तुएँ : वे वस्तुएँ जो न सिर्फ़ उपभोक्ताओं के लिए बल्कि व्यापक समाज के लिए भी उपयोगी होती हैं, विशेष गुण वस्तुएँ कहलाती हैं। इनके उपभोग को समाज अथवा सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है।

निजी वस्तुएँ : वे वस्तुएँ जो उपभोग में प्रतिस्पर्ध्ये होती हैं और उनके प्रयोग से उपभोक्ताओं को सरलता से अपवर्जित किया जा सकता है, निजी वस्तुएँ कहलाती हैं।

सार्वजनिक वस्तुएँ : वे वस्तुएँ जो उपभोग में प्रतिस्पर्ध्येतर होती हैं और उनके उपभोग से उपभोक्ताओं को बिल्कुल भी अपवर्जित नहीं किया जा सकता, सार्वजनिक वस्तुएँ कहलाती हैं।

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) Ambar Ghosh and Chandana Ghosh (2014). *Public Finance*, Prentice Hall India Learning. Edition 2nd.

2) David N Hyman, *Public Finance: A Contemporary Application of Theory to Policy*, South Western Cengage Learning, Edition 10th or beyond.

3) Richard A Musgrave and Peggy B Musgrave, *Public Finance in Theory and Practice*, McGraw Hill, Edition 4th or beyond.

4.11 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) वे वस्तुएँ जिनका उपभोग करना (खाना, बरतना, रखना) हम पसंद करते हैं, लाभ-वस्तुएँ कहलाती हैं। चाय, बर्गर, पतलून, बाइक, स्ट्रीट लाइट एवं धूम्रपान सामग्री इनके कुछ उदाहरण हैं। वे वस्तुएँ जिनसे हम निज़ात पाना चाहते हैं, हानि-वस्तुएँ कहलाती हैं। इनके उदाहरण हैं– कूड़ा-करकट, कचरा, प्रदूषण एवं भूमंडलीय तापन।

2) आय, कीमत, टिकाऊपन और प्रयोग कुछ आधार हो सकते हैं।

3) वस्तुओं में सेवाएँ शामिल होती हैं, जैसे दिन में रात शामिल होती है। जब उनमें भेद किया जाना हो तो वस्तुएँ मूर्त होती हैं और सेवाएँ अमूर्त। वस्तुओं का भंडारण कर बाद में उपभोग किया जा सकता है, सेवाओं का उसी क्षण उपभोग किया जाना होता है जबकि वे प्रस्तुत की जाती हैं।

4) यदि किसी वस्तु संबंधी किसी वरूक्ति का उपभोग किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उपभोग हेतु उपलब्ध वस्तु की मात्रा कम नहीं करता है तो उपभोग प्रतिस्पर्ध्येतर कहलाता है।

बोध प्रश्न 2

1) लम्बवत् जब X-अक्ष मात्रा निरूपित करता हो और Y-अक्ष वैयक्तिक सीमांत उपयोगिताएँ/लाभ निरूपित करता हो।

2) $MSC = MB_A + MB_B$ जहाँ A और B दो उपभोक्ता हैं।

3) सैम्युल्सन सामान्य संतुलन प्रतिदर्श अपनाते हैं जबकि लिण्डल आंशिक संतुलन दृष्टिकोण।

4) जब अतिरिक्त उपभोक्ताओं को सार्वजनिक वस्तु प्रदान करने की सीमांत लागत शून्य से ऊपर बढ़नी शुरू हो जाती है तो सार्वजनिक वस्तु को संकुल्य कहा जाता है।

5) कोई क्लब वस्तु किसी सार्वजनिक वस्तु से इस अर्थ में भिन्न होती है कि इसका उपभोग लोगों के किसी वर्ग विशेष तक निहित किया जा सकता है।

6) विशेष गुण वस्तुएँ और अवगुण वस्तुएँ क्रमशः ऐसी वस्तुएँ हैं जो या तो वस्तु के रूप में महसूस नहीं की जाती अथवा उनके दीर्घावधि दुष्प्रभावों के बावजूद उनके उपभोक्ताओं द्वारा पसंद की जाती हैं। जबकि उपभोक्ता वर्ग विशेष गुण वस्तुओं की उपयोगिता की सीमा तक पूर्णतः लाभ समझने में सक्षम नहीं होता, वह अवगुण वस्तुओं के उपभोग द्वारा हानिपरकता का पूर्णतः आकलन करने में भी विफल रहता है।

7) ग़ैर-अपवर्ज्यता के कारण, उपभोक्तागण अपने वास्तविक अधिमान प्रकट करने हेतु प्रेरित नहीं होते। इस तथ्य के इष्टतम प्रावधान हेतु निहितार्थ हैं क्योंकि सामाजिक माँग कम करके आँकी जा सकती है।

8) स्ट्रीट-लाइट, मच्छर मारने हेतु धूमन, कूड़ा-निपटान, आदि स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं के उदाहरण हैं।

9) स्थानीय सरकारों के बीच प्रतिस्पर्धा स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं के प्रावधान के माध्यम से निवासियों को आकर्षित किए जाने को बढ़ावा दे सकती है।

10) अर्थव्यवस्थाओं, संस्कृतियों, अवधारणाओं, प्रौद्योगिकियों का भूमंडलीकरण तथा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की परिपक्वता।